निबन्धों की दुनिया

प्रेमचन्द

प्रधान सम्पादक

निर्मला जैन

सम्पादक

रेखा सेठी

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004
फ़ोनः +91 11 23273167 फ़ैक्सः +91 11 23275710
www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com

NIBANDHON KI DUNIYA : PREMCHAND
Chief Editor : Nirmala Jain
Editor : Rekha Sethi

ISBN : 978-93-5072-164-3
Literary Essays

© 2012 लेखक व उनके उत्तराधिकारी

प्रथम संस्करण
मूल्य : ₹ 395

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

ओम ऑफ़सेट, दिल्ली-110093 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

प्रेमचन्द 7

साहित्य

साहित्य का उद्देश्य 19
जीवन में साहित्य का स्थान 32
कहानी-कला : 1 39
कहानी-कला : 2 43
कहानी-कला : 3 49
उपन्यास 53
उपन्यास का विषय 62

भाषा

उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी 71
क़ौमी भाषा के विषय में कुछ विचार 80
बे-राष्ट्र-भाषा का राष्ट्र 92
राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ 95

स्वदेश

स्वराज्य के फायदे 111
साम्प्रदायिकता और संस्कृति 124
मनुष्यता का अकाल 128
मानसिक पराधीनता 135

पूँजीवाद

पुराना ज़माना : नया ज़माना 143
महाजनी सभ्यता 154
अन्धा पूँजीवाद 162

अमेरिका में कृषक विद्रोह 165
हतभागे किसान 167

विविध

भारत 1983 में 173
सिनेमा और जीवन 177
एकता 180
जाग्रति 183
बच्चों को स्वाधीन बनाओ 189

जाति-भेद : अछूत-समस्या का सन्दर्भ

हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का प्रश्न 195
अछूतों को मन्दिरों में जाने देना पाप है 197
अस्पृश्यों की महत्त्वाकांक्षा 200
मन्दिर प्रवेश और सरकार 201
महात्मा जी का व्रत 204
मन्दिर प्रवेश और हरिजन 206

स्त्री प्रश्न : कुछ टीपें

नारी जाति के अधिकार 211
भारतीय महिलाओं में नवीन जाग्रति 213
विधवाओं के गुज़ारे का बिल 214
क्या स्त्रियों का पाजामा पहनना जुर्म है? 216